

भावात्मक विकास

पूनम*

भाव मानसिक स्थिति को प्रभावित करने वाले होते हैं तथा शारीरिक या मानसिक उत्तेजना के समय सदा क्रियाशील होते हैं। जैविक या मनोवैज्ञानिक प्रेरकों की तरह भाव व्यवहार को क्रियाशील एवं निर्देशित कर सकते हैं। भावात्मक व्यवहार, अभिव्यक्ति और मानसिक प्रतिक्रियाओं का परस्पर मिश्रण है। मनोभाव का शारीरिक पक्ष विविध शारीरिक गतियों, जैसे — किन्हीं विशेष ग्रंथियों के स्राव, रक्त परिभ्रमण में तीव्रता, तीव्र हृदय स्पंदन आदि में प्रकट होता है। वहीं दूसरी ओर मानसिक भाव क्रोध, भय, दुःख और आनंद में फलित होते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि इन्हें नियंत्रित किया जाना चाहिए जिसके लिए बच्चों को भावात्मक स्थिरता विकसित करने के लिए क्रियाएँ करवानी चाहिए। उन्हें भावात्मक रूप से अवश्य परिपक्व होना चाहिए। भावात्मक परिपक्वता का तात्पर्य यह नहीं है कि जीवन में भावनाओं और मनोभावों का अभाव हो। भाव जीवन के प्रेरक हैं और जीवन को जीवन के योग्य बनाते हैं। प्रस्तुत लेख में बच्चों के भावात्मक विकास पर चर्चा की गयी है।

भाव शब्द अंग्रेजी के *इमोशन* शब्द का हिंदी रूपांतरण है। *इमोशन* शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के *इमोवियर* से हुई है। भावों से आशय मस्तिष्क की उस अवस्था से है जो व्यक्ति को उत्तेजित कर देती है और तब उस पर भाव का प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति उत्तेजित हो जाता है। जब हम बच्चों में भावात्मक विकास की बात करते हैं, तो पाते हैं कि बच्चे अनेक विभिन्न भावात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करते हैं। कई बार वे उत्तेजित और उल्लासित होते हैं तो कभी दुःखी

और उदास होते हैं और कभी किसी क्षण वे क्रोध प्रदर्शित करते हैं। भावात्मक व्यवहार अभिव्यक्ति और मानसिक प्रतिक्रियाओं का परस्पर मिश्रण है। भावात्मक अभिव्यक्ति का मानसिक पक्ष विशेषकर मानसिक भावों, जैसे — क्रोध, भय, दुःख और आनंद में फलित होता है। भावों का शारीरिक पक्ष विविध शारीरिक गतियों, जैसे — विशिष्ट ग्रंथियों से स्राव, रक्त परिभ्रमण की तीव्रता, तीव्र हृदय स्पंदन, पसीना आना आदि में अभिव्यक्त होता है।

* अध्यापिका, आई.आई.टी. नर्सरी स्कूल, नयी दिल्ली 110 016

भावात्मक विकास का क्रम

यदि हमें स्कूल जाने वाले किसी बच्चे के भावों को समझना है तो उसके आरंभिक वर्षों के भावात्मक विकास पर विचार करना आवश्यक है। कभी-कभी हम देखते हैं कि नवजात शिशु इस तरह व्यवहार करते हैं जैसे वे हिंसक रूप से उत्तेजित हैं। इस प्रकार के उत्साही व्यवहार का अर्थ उसके भावों की तीव्रता से है जिसका तात्पर्य यह है कि आरंभिक काल के अनुभव भी उतने ही तीव्र हो सकते हैं जितने कि वृद्धि के बाद की अवस्था में।

बच्चे विकास के दौरान प्रचुर और विविध भावात्मक अनुभव प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। जन्म से 2 वर्ष तक की आयु में बच्चे को विविध अनुभव प्राप्त होते हैं। इसी समय वह अनेक भावात्मक अनुभवों से होकर गुजरता है जो जीवन के प्रति उसके दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं।

मुख्यतः जन्म के समय सामान्य उत्तेजनाएँ मुख्य रूप से उसकी भूख और सुविधाओं से संबंधित होती हैं। लेकिन 2-3 महीनों के बाद बच्चा उल्लास के साथ व्यथा के निश्चित संकेत प्रकट करने लगता है और 6 महीने तक विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहनों के अनावृत होने के साथ बच्चा भावों की अन्य घटनाओं, जैसे — अपने कष्ट या असुविधाओं को प्रकट करने लगता है। उसमें भय, निराशा और क्रोध विकसित हो जाते हैं। अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि से उसे प्रसन्नता मिलती है और जब तक वह एक वर्ष पूरा करता है उसकी यह प्रसन्नता अपने आपको प्रेम से भिन्न कर लेती है। इस प्रकार से जैसे-जैसे बच्चा बढ़ता है वह अन्य लोगों की

भावनाओं को पहचानने लगता है और उनके प्रति स्पष्ट रूप से प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करने लगता है। इस प्रकार से बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार भावात्मक भावों को व्यक्त करने के लिए विकास संबंधी बदलाव प्रकट करते हैं।

बाल भावों के लक्षण

- भावों की शारीरिक अभिव्यक्ति होती है। वे क्रोध से आगबबूला हो जाते हैं और भय से जड़ हो जाते हैं।
- प्रत्येक काल में भाव प्रकट होते हैं। जब बच्चे को क्षुब्ध किया जाता है तो वह क्रोधित हो जाता है।
- भाव विस्तृत होते हैं। डर का भाव बच्चों में सामान्यतः जागृत हो ही जाता है जिसे समाप्त किया जा सकता है।
- भाव का एक अन्य लाक्षणिक गुण उसकी सततता है। लेकिन, बच्चों के भाव अल्पकालीन एवं परिवर्तनशील होते हैं। भावों की परिवर्तनशीलता की प्रकृति एक भाव के अन्य भाव में तीव्र बदलाव में निहित रहती है। उदाहरण के लिए, हँसी से आँसुओं में, क्रोध से मुस्कुराहट और ईर्ष्या से प्रेम में।
- बच्चों के भाव तीव्र होते हैं। बच्चों में भावों के सहसा प्रस्फोटन की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा रोता है, तो वह बहुत जोर से रोता है और आसानी से सँभलता नहीं है।
- भाव सृजनात्मक भी होते हैं तथा विनाशात्मक भी। बच्चे हँसते हैं, रोते हैं, भय, क्रोध और प्रेम भी प्रकट करते हैं। इन भावात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से बच्चे अन्य व्यक्तियों से अपनी बात कहने में सक्षम होते हैं। साथ ही अपने वर्तमान

भावों, आवश्यकताओं और इच्छाओं की सूचना उन तक पहुँचा सकते हैं। मुस्कराहट, शिकन और क्रोध के प्रस्फोट अनेक सामाजिक कार्य करते हैं। यही भावात्मक अभिव्यक्ति सामाजिक संबंध बनाने में सहायता करती है। भावात्मक प्रदर्शन के द्वारा शिशु और छोटे बच्चे अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं को संप्रेषित कर सकते हैं। किसी व्यक्ति के भावात्मक विकास का उसकी खुशी पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

मनोभाव सृजनात्मक होते हैं और विनाशात्मक भी। ये व्यक्ति को बेचैन या चिंतित करते हैं तथा जीवन में उत्साह भी भरते हैं। शिशु पालन के अभ्यास का उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों को तैयार करना है जो दर्द, दुःख और निराशा का सामना कर सकें, क्योंकि जीवन में इनसे बचा नहीं जा सकता। मनोभाव बच्चे को आनंद का रसास्वादन करने में सहायता करते हैं जो अपने जीवन काल में जिंदगी से मिलता है।

बाल्यकाल के सामान्य मनोभाव

भय

भय किसी खतरनाक स्थिति से स्वरक्षात्मक पलायन है। मनोवैज्ञानिकों और जीव वैज्ञानिकों दोनों ने ही भय का अच्छी तरह से अध्ययन किया है। उनके अनुसार, भय के दो मौलिक स्रोत हैं। पहला, तीव्र ध्वनि की आकस्मिकता से भय जागृत हो सकता है। यह भी देखा गया है कि अचानक ताली बजाने से भी शिशु डर जाते हैं। दूसरा, अचानक गिरने या सहारे के खोने से भय उत्पन्न हो जाता है। बच्चे अंधकार से भी डरते हैं, लेकिन यह डर सीखा हुआ होता है। इस प्रकार का

भय अनुकूलित भय कहलाता है। मृत्यु या गंभीर रोग या निर्धनता आदि के अधिकांश भय गलत प्रशिक्षण के कारण केवल जीवनकाल में सीखते हैं। बहुत बार यह भी देखा जाता है कि अपनी बात मनवाने के लिए माता-पिता डरावनी चीजों जैसे भूत या अंधकार के बारे में बातें करके अपने बच्चों को डराते हैं। इस प्रकार के प्रशिक्षण का बच्चों पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

छोटे बच्चों में भय विशिष्ट नहीं, बल्कि एक सामान्य परिघटना है। यथासमय किसी वस्तु, लोग या स्थिति के बारे में यह अधिक विशिष्ट बन जाता है। मूलतः उनका भय, अहमन्यवादी होता है। स्कूल-पूर्व के वर्षों में बच्चा सामाजिक अपयश और प्रतिष्ठा के नाश से डरने लगता है और अंधकार का भय प्रायः अकेले होने के भय से जुड़ा होता है। यह डर अकेला छोड़ दिए जाने का या परित्याग किए जाने का है।

शैशवकाल और लगभग पहली कक्षा के समय के बीच अधिकांश बच्चे पशुओं से डरते हैं। लेकिन धीरे-धीरे अपने पर्यावरण में पशुओं से परिचय होने के बाद यह डर कम हो जाता है।

प्रेम

बच्चे के सामान्य विकास के लिए प्रेम की महती आवश्यकता है। वह प्रेम करना और प्रेम पाना चाहता है। वह इस संसार में दूसरों पर पूर्णतः निर्भर होकर आता है। कुछ हद तक उसकी यह निराश्रयता उसकी शक्ति है, क्योंकि यह दूसरों को उसकी रक्षा और देखभाल के लिए प्रेरित करती है। बच्चे की देखभाल करने के इसी भाव के कारण माता (परिवार के अन्य सदस्य भी बच्चे को खिलाती-पिलाती है और उसे लाड़-दुलार देती है।

माता द्वारा उसकी यह देखभाल उसके प्रेम को प्रभावित करती है। प्रेम की भावनाएँ परस्पर होती हैं। माता-पिता को अपने बच्चों के प्रेम की आवश्यकता होती है और बच्चों को भी अपने माता-पिता का प्यार चाहिए होता है। प्रेम, सुख की प्रतिक्रिया है। बच्चे का व्यक्ति या वस्तु के प्रति प्रेम उसके साथ अपने संबंध से प्राप्त होने वाले सुख की अनुभूति के कारण उत्पन्न होता है।

प्रेम का भाव बच्चे के व्यक्तित्व के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। जिस बच्चे के प्रेम का मनोभाव पूर्णतः संतुष्ट होता है वह भाग्यशाली होता है और उसके व्यक्तित्व का स्वस्थ ढंग से विकास होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश जो बच्चे प्रेम से वंचित रह जाते हैं वे मानसिक दुर्बलता के साथ कमजोर व्यक्ति या अविकसित व्यक्ति बनकर रह जाते हैं। परंतु यह भी उतना ही सत्य है कि माता-पिता का आवश्यकता से अधिक प्रेम बच्चों के जीवन में कई प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न करता है। एक सीमा से अधिक प्रेम बच्चों को परिवार पर अत्यधिक निर्भर बना देता है। इस प्रकार किसी भी प्रकार के आत्मविश्वास के अभाव में बच्चा वास्तविक और सच का सामना नहीं कर सकता। इसके साथ ही वह व्यावहारिक जीवन के परिवेश में अपने आपको ढाल पाने में असमर्थ हो जाता है। माता-पिता को अपने बच्चों को प्रेम करने में संतुलन के प्रति सावधान रहना चाहिए।

बच्चे के लिए सच्चे प्रेम का अर्थ है कि उसको स्वीकार कर लिया गया है। जिस बच्चे को स्वीकार कर लिया जाता है वह सभी प्रकार के डर से मुक्त हो जाता है। वह चीजों के साथ प्रयोग करने का, खोजने, गलतियाँ करने और प्रक्रिया में सीखने में संकोच का

अनुभव नहीं करता। वह किसी शरारतपूर्ण कृत्य या अवज्ञा के कृत्य में डरा हुआ अनुभव नहीं करता। माता-पिता का बच्चे के प्रति प्रेम जितना अधिक सच्चा होगा उतनी ही अधिक बच्चे में अन्य लोगों को प्रेम करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी।

क्रोध

क्रोध को कष्ट और शत्रुता के प्रबल भाव के रूप में परिभाषित किया जाता है। क्रोध का प्रस्फोटन हिंसक होता है जो या तो स्वयं के प्रति या दूसरों के प्रति होता है। शैशवकाल से ही बच्चा क्रोध प्रकट करने में सक्षम होता है। सामान्यतः बच्चा जब भूखा होता है या कोई परेशानी होती है तब ही वह क्रोध प्रकट करता है। जैसे-जैसे बच्चे की मानसिक और प्रेरक योग्यताएँ परिपक्व होती जाती हैं तो उसके क्रोध को प्रोत्साहित करने के अवसर बढ़ जाते हैं। जैसे, जब कोई भी व्यक्ति या बात जो उसकी गतिविधियों में विघ्न डालते हैं या उसकी प्रतिष्ठा, योजनाओं, इच्छाओं या विचारों में हस्तक्षेप करते हैं। जब बच्चा दुर्बल, थका हुआ या भूखा होता है तब उसे शीघ्र क्रोध आ जाता है। माता-पिता या शिक्षक द्वारा अत्यधिक या अनावश्यक नियंत्रण भी कभी-कभी बच्चे को क्रोधित कर देता है।

बच्चे के क्रोध की प्रवृत्ति अल्पकालिक होती है। एक क्रोधित बच्चे को आसानी से शांत किया जा सकता है और उसको सामान्य व्यवहार में पुनः लाया जा सकता है। क्रोध को प्रायः ही विस्थापित किया जाता है। इसका अर्थ है कि कभी-कभी क्रोध का कारण बड़ा हो सकता है और उसे तुच्छ कारण के संबंध में अभिव्यक्त किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, बच्चा माता-पिता के डाँटने पर क्रोधित हो

सकता है, लेकिन कुछ समय तक शांत बना रहता है और बाद में किसी अन्य गतिविधि जैसे खिलौने फेंकने के द्वारा अपना क्रोध प्रकट करता है। शारीरिक रूप से विकृत बच्चों या जिनको सीखने या समझने में कोई कठिनाई है, वे थोड़े से भी उकसाने पर क्रोधित हो जाते हैं।

हस्तक्षेप के विरुद्ध बच्चे का विरोध कभी-कभी नकारात्मकता का रूप धारण कर सकता है। सभी सामान्य बच्चे माता-पिता की सलाह को अनसुना करके या वह जो उनको करने के लिए कहा जाता है, उसके ठीक विपरीत करके प्रतिरोधात्मक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। क्रोध की अभिव्यक्ति रोना या हल्की तानेबाजी में हो सकती है। जब बच्चा बड़ा हो जाता है तब वह अपने क्रोध को प्रकट करने के लिए कोसने, गाली-गलोच करने या कुछ विकट परिस्थितियों में अपने-आपको चोट पहुँचा सकता है। छोटे बच्चे अपना क्रोध सामान्यतः बड़ों के साथ सहयोग करने से मना करके अभिव्यक्त करते हैं। कुछ अन्य उन लोगों के प्रति बदले या घृणा की भावना विकसित कर लेते हैं जो उनको क्रोध न दिलाते हों।

क्रोध एक विनाशकारी मनोभाव है। यह मस्तिष्क को अशांत कर देता है और व्यक्ति को अपनी पूर्ण योग्यता में कार्य नहीं करने देता। इसकी विनाशकारी प्रवृत्ति से जीवन में सामंजस्य की कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। लेकिन इसके कुछ सकारात्मक पक्ष भी हैं। यह ऊर्जा का शक्तिशाली स्रोत है। क्रोधी व्यक्ति अपने प्रति किए गए सभी प्रकार के अन्याय का विरोध करते हैं। वे शोषण, भ्रष्टाचार और सामाजिक बुराईयों का प्रतिकार करते हैं।

क्रोध को कैसे नियंत्रित करें?

क्रोध आधारभूत मनोभाव है इसलिए इसकी उपस्थिति अवश्यंभावी है, लेकिन निश्चित रूप से इस मनोभाव को पर्याप्त ढंग से करने के तरीके हैं —

- बच्चों को आत्मनियंत्रण विकसित करने की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- क्रोध को प्रोत्साहित करने वाले प्रेरकों को पर्यावरण से समाप्त कर देना चाहिए।
- माता-पिता व शिक्षकों को बच्चों के प्रति सहानुभूतिशील और समझदार होने की आवश्यकता है और उन्हें बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने की स्थिति में होना चाहिए।
- खेल में भावशांति की क्षमता होती है। इसलिए खेल बच्चों में क्रोध को नियंत्रित करने में अत्यधिक प्रभावशाली है।
- बच्चों को तनाव से और निरंतर कार्य से दूर रखना चाहिए।
- छोटे बच्चों को आदेश नहीं देना चाहिए।
- बच्चे का आत्मसम्मान बनाए रखने के लिए उसकी प्रशंसा करें।

ईर्ष्या

ईर्ष्या एक सर्वव्यापी मनोभाव है। यह क्रोध की ही अपवृद्धि होती है। सामान्यतः यह विश्वास किया जाता है कि इस विशेष मनोभाव को 2 वर्ष की आयु में भी अनुभव किया जाता है। ईर्ष्या, रोष का दृष्टिकोण है जो दूसरों के प्रति होता है। ईर्ष्या को सामाजिक स्थितियाँ जन्म देती हैं, जैसे — जब माता-पिता किसी अन्य में अधिक रुचि लेते हैं और उस पर अधिक ध्यान देते हैं, तो बच्चे को ईर्ष्या होती है। ईर्ष्या के कई कारण

हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अच्छे कपड़े, परीक्षा या खेल में उपलब्धियाँ, उच्च सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति, खिलौने, शिक्षक द्वारा कक्षा में अधिक ध्यान देना दूसरों में ईर्ष्या पैदा कर सकती है। ईर्ष्या उग्र रूप में अत्यधिक विनाशकारी होती है एवं ईर्ष्या बच्चों को बालसुलभ व्यवहार की ओर ले जा सकती है। वे अवनति के चिह्न प्रकट कर सकते हैं, जैसे — अँगूठा चूसना, बिस्तर पर पेशाब करना आदि। कभी-कभी उनमें ईर्ष्या दूसरे बच्चों से झगड़ने, चिढ़ाने, डराने-धमकाने में दिखाई पड़ती है या अवांछनीय टिप्पणियाँ करने में प्रकट होती है।

ईर्ष्या को कैसे नियंत्रित करें?

- घर एवं विद्यालय का वातावरण अनुकूल और सहायक होना चाहिए। माता-पिता एवं शिक्षक का उन बच्चों के प्रति अत्यधिक सहानुभूतिपूर्वक दृष्टिकोण रखना चाहिए, जिन्हें समंजन की कठिनाई होती है जिससे कि वे कभी असुरक्षित या अपेक्षित महसूस न करें।
- बच्चों को अनुचित प्रेम या स्नेह नहीं देना चाहिए। माता-पिता एवं शिक्षकों को बच्चों के प्रति व्यवहार में और शिक्षा में निष्पक्ष दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।
- बच्चों को बहुत आरंभ से ही हार या असफलता को गरिमा के साथ स्वीकार करने के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। असफलता पर काबू पाने के लिए उनको नवीन ऊर्जा के संचयन के लिए उत्साहित भी किया जाना चाहिए।

आक्रामकता

आक्रामकता को सामान्यतः उस व्यवहार के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका प्रयोजन दूसरों को शारीरिक, मानसिक या व्यक्तिगत कष्ट पहुँचाने या

संपत्ति को नष्ट करना होता है। इसका उद्देश्य मूलतः दूसरों को कष्ट पहुँचाना है। मूल रूप से आक्रामकता दो प्रकार की होती है। एक, शत्रुतापूर्ण आक्रामकता होती है जो दूसरे को चोट पहुँचाने के एकमात्र उद्देश्य से की जाती है। दूसरी, सहायक आक्रामकता होती है जिसका उद्देश्य पीड़ितों को पीड़ा न होकर लाभ प्राप्त करना होता है। लेकिन शत्रुतापूर्ण और सहायक आक्रामकताओं की प्रतिक्रियाएँ सुस्पष्ट नहीं होतीं। बच्चों में आक्रामक प्रतिक्रियाएँ शारीरिक या शाब्दिक हो सकती हैं या नरम या उग्र हो सकती हैं। बच्चे प्रायः क्रोध का हिंसक प्रस्फोट प्रहार करके, काटकर, लात जमा के, धूँसा मार के, धक्का मारकर या खींचतान करके प्रकट करते हैं। आक्रामकता सीखी हुई प्रतिक्रिया हो सकती है यह प्रेक्षण के द्वारा या नकल उतारकर सीखी जा सकती है। बच्चे बहुत ही कम आयु में अपनी माँग मनवाने के लिए आक्रामकता का व्यवहार सीख जाते हैं और सच्चाई यह है कि जितनी अधिक बार यह प्रबलित होता है, उतनी ही अधिक बार यह प्रदर्शित किया जा सकता है।

भावात्मक विकास के लिए विद्यालय और घर में क्या-क्या कर सकते हैं?

- शिक्षक और माता-पिता बच्चों से बातचीत करें
- बच्चों के लिए खिलौने बनाएँ व खेलें
- प्यार का व्यवहार करें
- बाहर घूमने ले जाएँ व आस-पड़ोस की जानकारी दें
- माता-पिता को समझाएँ कि बच्चों को भरपूर प्यार दें
- विद्यालय में ऐसा माहौल बनाएँ कि बच्चे दूसरे बच्चों से हिलमिल कर रहें
- बच्चों की क्षमता के अनुसार क्रियाएँ कराएँ

- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को भरपूर प्यार दें तथा उन्हें उनकी ज़रूरत के अनुसार चीज़ें उपलब्ध करवाएँ। उन्हें आभास दिलाएँ कि वे भी अपना कार्य स्वयं कर सकते हैं। माता-पिता को समझाएँ कि वे इन बच्चों को स्वीकार करें और उन्हें घर की गतिविधियों में शामिल करें
- बच्चों को व्यस्त रखें
- उन्हें स्वयं करके सीखने के अवसर दें
- बच्चों के साथ सभी त्योहार हँसी-खुशी मनाएँ
- बच्चों को अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का

अवसर दें। उनकी बातें ध्यान से सुनें और बीच में टोका-टाकी न करें। उन्हें डाँटे नहीं।

बच्चों में भावात्मक विकास हो इसके लिए विद्यालय में सुविधाएँ होनी चाहिए, जैसे — शिक्षिका बच्चे को मिट्टी के खेल, कहानी का अभिनय करना, लय व ताल पर नाचना, गुड़िया का खेल जैसे काल्पनिक खेल, मूक अभिनय, फूल-पत्ती, टहनी आदि से मनपसंद आकृति बनाना, चॉक से स्लेट या फ़र्श पर आकृति बनाना जैसी गतिविधियाँ करवा सकती हैं।

संदर्भ

वर्मा, प्रीति 1979. *बाल विकास*. दोआबा बुक हाउस. नयी सड़क, दिल्ली.

शर्मा, उषा 2017. *पूर्व बाल्यावस्था देखभाल व शिक्षा*. दोआबा बुक हाउस. नयी सड़क, दिल्ली.

———. 2017. *बाल विकास के आयाम*. दोआबा बुक हाउस. नयी सड़क, दिल्ली.